ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

तुम कब जाओगे, अतिथि

कक्षा - नवी

विषय – हिंदी
पाठ : ५
पाठ का नाम : तुम कब जाओगे, अतिथि

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

पाठ व्याख्या

1.- आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है-तुम कब जाओगे, अतिथि?
तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो ना! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चैथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चैथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनॉट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?

शब्दार्थ –
चतुर्थ दिवस - चार दिन
निस्संकोच – बिना संकोच के
एस्ट्रॉनॉट्स – अन्तरिक्ष यात्री
अंतरंग - घनिष्ट

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या - लेखक अपने घर में आए अतिथि को अपने मन में संबोधित करते हुए कहता है कि आज अतिथि को लेखक के घर में आए हुए चार दिन हो गए हैं और लेखक के मन में यह प्रश्न बार-बार आ रहा है कि 'तुम कब जाओगे, अतिथि? लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि वह जहाँ बैठे बिना संकोच के सिगरेट का धुआँ उड़ा रहा है, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। अतिथि को दिख रहा होगा कि उस कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा जानती हैं और अपना वक्त आते ही अपने नर्म स्वभाव के रहते बदलने के लिए आतुर रहती हैं। लेखक कहता है कि पिछले दो दिनों से वह अतिथि को कैलेंडर दिखाकर तारीखें बदल रहा है। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अगर उसे हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है। अतिथि की लगातार आवभगत का यह चौथा भारी दिन है। ऐसा लेखक ने इसलिए कहा है क्योंकि लेखक अतिथि की सेवा करके थक गया है। पर चौथे दिन भी अतिथि के जाने की कोई संभावना नहीं लग रही थी। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों अन्तरिक्ष यात्री भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय लेखक के अतिथि एक छोटी-सी यात्रा कर लेखक के घर आए थे। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अतिथि ने अपने भारी चरण-कमलों की छाप लेखक की ज़मीन पर अंकित कर ली थी, उसने एक घनिष्ट निजी संबंध लेखक से स्थापित कर लिया, उसने लेखक की आर्थिक सीमाओं को देख लिया था। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम बिल्कुल सही वक्त है। क्या उसे उसकी मातृभूमि नहीं पुकारती? अर्थात क्या उसे उसके घर की याद नहीं आती।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

2.- उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुसकराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की थी। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्ज़ियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाज़ी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया। हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। पर तुमने ऐसा नहीं किया।

शब्दार्थ –

अज्ञात आशंका - अन्जान डर
स्नेह-भीगी - प्यार से भीगी
भावभीनी - प्रेम से ओत-प्रोत

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या - लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उस दिन जब वह आया था तो लेखक का हृदय ना जाने किसी अनजान डर से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं लेखक का बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक प्यार से भीगी हुई मुस्कुराहट के साथ लेखक ने अतिथि को गले लगाया था और लेखक की पत्नी ने अतिथि को सादर नमस्ते की थी। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उसके सम्मान में हमने उन्हें रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। अतिथि को स्मरण याद होगा कि दो सब्ज़ियों और रायते के अलावा उन्होंने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में लेखक को एक उम्मीद थी। यह उम्मीद थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार अतिथि सत्कार की छाप अपने हृदय में ले कर अतिथि चला जायेगा। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि वे अतिथि को रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर अतिथि नहीं मानेगा और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाएगा। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी अतिथि मुस्कान बनाए लेखक के घर में ही बने रहे। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उन्होंने अपने दुःख को पी लिया और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर लेखक अतिथि को ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर लेखक ने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को अतिथि को सिनेमा दिखाया। लेखक के सत्कार का यह आखिरी छोर था, जिससे आगे लेखक कभी किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद लेखक को अनुमान था कि विदाई का वह प्रेम से ओत-प्रोत भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब अतिथि विदा होता और लेखक उसे स्टेशन तक छोड़ने जाता। पर अतिथि ने ऐसा नहीं किया। वह लेखक के घर पर ही रहा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

3.- तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा,"मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।"
यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी। तुम्हारे सामीप्य की वेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था। पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।
"किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे।" मैंने कहा। मन-ही-मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है।
"कहाँ है लॉण्ड्री?"
"चलो चलते हैं।" मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा।
"कहाँ जा रहे हैं?" पत्नी ने पूछा।
'इनके कपड़े लॉण्ड्री पर देने हैं।" मैंने कहा।
मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर बिस्तर खोल दिया था। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों ठहरेगा।

शब्दार्थ –
आघात अप्रत्याशित - अनसोचे प्रहार
औपचारिक - दिखावटी

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या - लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि तीसरे दिन की सुबह अतिथि ने लेखक से कहा कि वह धोबी को कपड़े देना चाहता है। लेखक के लिए यह सुनना अनसोचे प्रहार की तरह था और इसकी चोट बहुत मार्मिक थी। अतिथि से निकटता का यह पल एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगा, इसका लेखक को कोई अनुमान न था। पहली बार लेखक को लगा कि अतिथि हमेशा देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है। लेखक अतिथि से कहता है कि कपड़ों को किसी लॉण्ड्री में दे देते हैं इससे वे जल्दी धुल जाएंगे, लेखक के मन में एक विश्वास पल रहा था कि शायद अतिथि को अब जल्दी जाना है। अतिथि ने लेखक से पूछा कि लॉण्ड्री कहाँ है? लेखक ने हमेशा की तरह अपनी बनियान और दिखावटी कुर्ता पहना और कहा कि चलो चलते हैं। इतने में लेखक की पत्नी ने पूछा कि वे लोग कहाँ जा रहे हैं? पत्नी के प्रश्न का उत्तर देते हुए लेखक कहता है कि अतिथि के कपडे लॉण्ड्री में देने हैं। लेखक के इतना कहते ही लेखक की पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। लेखक कहता है कि आज से कुछ बरस पूर्व उसकी ऐसी आँखें देख लेखक ने उससे शादी की थी। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो लेखक का मन छोटा होने लगता है। लेखक कहता है कि आज वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि शायद अधिक दिनों तक ठहरेगा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow